कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) .....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन ..... शनिवार .....

दिनांक ..... 9/03/19 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज का उपयोग में लिया गया है। 165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-क

प्र.1 वर्तमान साहित्यकारों - - - - - - - सम्भावना नहीं।

अ) => अभी तक हमनें जो साहित्य देखा है उसमें कर्मशक्ति अभाव है। किन्तु कर्म व साहित्य दोनों ही लेखक के अनुसार एक-दुसरे जुड़े है। अत: एक साहित्यकार का आदर्श कर्मशक्ति होना चाहिए।

ब) => धार्मिकता का अभिमान रखने वाला कभी ईश्वर की दया का पात्र नहीं हो सकता क्योंकि ए लेखक जीवन जीने के लिए एकता व धर्मनिरपेक्षता को आवश्यक मानता है धार्मिकता को नहीं।

प्र.2 गिरना क्या उसका - - - - - - उठ मेरे साथ।

अ) => उन्नति के संदर्भ में मनुष्य की विशेषता है कि वह गिरता तो हैं किन्तु गिर कर भी पुन: उठने तथा आगे बढ़ने की चेष्टा रखता है। क्योंकि गिर कर पड़े रहना ही मृत्यु है।

ब) => प्रस्तुत काव्यांश हमें प्रेरणा देता है कि गिरते तो सब है किन्तु गिर कर फिर से उठना ही मनुष्यता है। यही मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ब

प्र०3

अ)

⇒ भाषा और बोली में अंतर निम्न है:-

i) भाषा का क्षेत्र विशाल होता है जबकि बोली का क्षेत्र सिमित है।

ii) भाषा की अपनी लिपी होती है जबकि बोली की कोई लिपी नहीं होती है।

ब)

⇒ भाषा के दो रूप निम्न है:-

i) लिखित रूप

ii) मौखिक रूप

प्र०4

अ)

⇒ वाह ⇒ हर्ष सूचक विस्मयादिबोधक अव्यय।

ब)

⇒ रोज़ ⇒ - क्रिया विशेषण

- 'व्यायाम' क्रिया की विशेषता बताने वाला।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०5

⇒ उपर्युक्त वाक्य में लक्षणा शब्द शक्ति है।

कारण ⇒ उपर्युक्त वाक्य में मुख्यार्थ में बाधा उत्पन्न हो रही तथा "हवा से बातें करता है" का अर्थ बहुत तेज़ी से खेलना या दौड़ने के संदर्भ में है। अतः मुख्यार्थ के स्थान पर लक्ष्यार्थ को ग्रहण किया जाता है। इस कारण लक्षणा शब्द शक्ति है।

प्र०6

⇒ विशेद्याभास अलंकार।

जब काव्य पंक्ति में वास्तविक विरोध न होते हुए विरोध का आभास हो तो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

प्रस्तुत काव्य पंक्ति के अर्थानुसार जो जितना श्याम (काला) रंग में डुबता है, उतना ही उज्ज्वल होता है। अर्थात विरोध का आभास होता है। इस कारण विरोधाभास अलंकार है।

प्र०7

अ) Eligible : पात्र या योग्य

ब) Gazzet : राजपत्र

BSEK-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड -ग

प्र.10 ⇒ गरुड़ को दावा .... महिमंडल में।

सन्दर्भ ⇒

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' से कवि भूषण द्वारा रचित कवित्त है।

प्रसंग ⇒

प्रस्तुत पद्यांश में वीर रस के कवि भूषण ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से शिवाजी की वीरता का बखान किया है।

व्याख्या ⇒

कवि भूषण कहते है कि जिस प्रकार सापों के शत्रु गरुड़ का आधिपत्य इस पृथ्वी के समस्त सर्पो पर है। जिस प्रकार शेर का आधिपत्य हाथियों पर मशहूर है। जिस प्रकार पहाड़ों को अपने वज्र से खण्डित कर देने वाले देवता इन्द्र का समस्त पहाड़ो पर तथा जिस प्रकार पश्चिम दिशा पर बाज का आधिपत्य प्रसिद्ध है उसी प्रकार इस अखंड संसार में जहाँ पर औरंगज़ेब की बादशाहत है वहाँ शिवाजी का भय तथा आधिपत्य है।

विशेष ⇒

1) भाषा ओजपूर्णता से भरपूर है।
2) उदाहरण अलंकार का सहज प्रयोग है।
3) भाषा वीर रस से लिप्त है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०11 यहाँ मुझे ज्ञात - - - - - - सद्भाव की घटी।

=)

सन्दर्भ =

प्रस्तुत गद्य हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में लेखक "जैनेन्द्र कुमार" द्वारा लिखित निबंध "बाज़ार दर्शन" से उद्धृत है।

प्रसंग =

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक पैसे से खरीदने की शक्ति पर व्यंग्य करते हुए बाज़ार की बढ़ती कपट के बारे में बताते है।

व्याख्या =

लेखक के अनुसार आवश्यकता के समय में काम आने में ही बाजार की सार्थकता है। बाज़ार की सार्थकता को वही मनुष्य समझ सकता है जो यह जानता हो कि उसे क्या चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपनी "परचेज़िंग पावर" दिखाने के लिए अनावश्यक वस्तु खरीदता है तो वह बज़ार की विनाशक शक्ति को ही बढ़ावा दे रहा है। ऐसे लोगों को न तो बाज़ार सच्चा लाभ प्रदान कर सकता है नहीं वे स्वयं सच्चा लाभ प्राप्त कर सकते है। वे केवल बाज़ार का बाज़ारूपन तथा उसकी कपटता बढ़ाते है। बाज़ार की कपटता घटने का अर्थ है सद्भाव का घटना।

विशेष = 1) शैली व्यंग्यात्मक तथा अर्थवैभव पूर्ण है।
2) अंग्रेजी तथा उर्दु भाषा के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र012 सहजता एवं ———— — लिद्ध कीजिए।

=) सहजता एवं सरलता से जीवन यापन करने में जो खुशी मिलती है वह बाह्य तड़क-भड़क में नहीं मिलती है। यह सत्य कथन है।

"तौलिए" एकांकी में मधु हर क्षेत्र में सफाई चाहती थी तथा वह इसे हद से ज्यादा आवश्यक समझती थी। मधु सफाई की सनक तक पहुँच चुकी थी। किन्तु किसी भी चीज़ की सनक से परिणाम के रूप में अन्तत: दु:ख ही प्राप्त होता है। एकांकी में भी बसन्त तथा मधु के बीच झगड़ा होने दु:ख ही प्राप्त होता है।

बसन्त के विचार मधु से थोड़े अलग थे। वह सफाई को आवश्यक मानता था किन्तु किसी चीज़ की सनक उसे अच्छी नहीं लगती थी। एकांकी में मधु बाह्य तड़क-भड़क पर ध्यान देती थी जबकी बसन्त सहजता, सरलता व सादगी से जीवन गुजारने का पक्षधर था। इसी कारण मधु को अन्तत: दु:खी होकर स्वयं के व्यवहार में परिवर्तन करने का विचार आया। किन्तु वह अपनी सोच व सनक को नहीं बदल पाई।

अत: "तौलिये" एकांकी के आधार पर हम कह सकते है कि वास्तविक खुशी सहजता व सरलता से जीवन व्यतित करने में ही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.13 'उषा' कविता — — — — — — कैसे?

उ. कवियों के कवि कहे जाने वाले तथा बिम्बधर्मी कवि के रूप में प्रसिद्ध कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित 'उषा' कविता में प्रातः कालीन सूर्योदय का सजीव चित्रण है।

कविता के प्रारम्भ मे ही कवि "प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे" पंक्ति के माध्यम से प्रातःकालिन स्वच्छ आकाश का वर्णन करते है। इसी नीले आकाश मे सूर्य की किरणे मिलने से कवि उसे "राख से लीपा हुआ चौका" कहते है अर्थात नीले रंग में सूर्य के प्रकाश की किरणे मिलने से उसका रंग राख जैसा प्रतित होता है।

धीरे-धीरे सूर्य की लालिमा आकाश में छाने लगती है। सूर्य की लालिमा को देखकर कवि उसकी तुलना काली स्लेट से करते है जिस पर किसी ने लाल खड़िया चॉक मल दी हो। इस प्रकार विभिन्न उपमाओं तथा उदाहरणों व उत्प्रेक्षा अलंकारों के माध्यम से कवि प्रातःकालिन सूर्य तथा 'उषा' की सुन्दरता का वर्णन करते है।

धीरे-धीरे सूर्य क्षितिज से ऊपर आने लगता है। यह दृश्य देख कवि को ऐसा लगता है मानों किसी सुन्दरी की गौर-झिलमिल देह हिल रहा है। अन्ततः सूर्योदय होने से उषा का जादू टूटता है। उपर्युक्त कविता कवि की बिम्बधर्मिता का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०14

⇒ राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध कवि कृपाराम खिड़िया के अनुसार सच्चा मित्र अपने मित्र के लिए कोई भी काम करने में संकोच नहीं करता है। इसी कारण अर्जुन के सारथी बनकर महाभारत युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने उनका रथ हाँका था।

प्र०15

⇒ श्रीकृष्ण की समीपता होने पर गोपियों को सारा वातावरण आनंददायक लगता था किन्तु कृष्ण के मथुरा जाने के बाद उन्हें यमुना नदी, नदी के किनारें उपस्थित पेड़ तथा सारी कृष्ण की स्मृति दिलाने वाली वस्तुएँ दुःखदायिनी लगती है। इसके माध्यम से गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम व अपनी विरह-वेदना को व्यक्त कर रही है।

प्र०16

⇒ लेखक सरदार पूर्ण सिंह के अनुसार मेहनतकश लोगों के काम और उनकी मजदूरी का मूल्य धन से नहीं अपितु परस्पर प्रेम बाँटकर कर० देना चाहिए। लेखक मज़दूरी करने वाले मजदूर में ही अपने ईश्वर के दर्शन होते है। इसी कारण लेखक ऐसा कहते है कि हमें मज़दूरी का मूल्य धन के स्थान पर प्रेम से चुकाना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०17 =>

लेखक ने सुना था कि कौसानी तो कश्मीर से भी सुंदर है। किन्तु कौसानी की सुंदरता से साक्षात होकर लेखक ने उसे स्विट्जरलैण्ड के समान सुन्दर बताया है। क्योंकि कौसानी जैसे बर्फीले प्रदेश की सुंदरता ने लेखक के आत्मा के संताप को भी हर लिया।

प्र०18 =>

हालावाद के प्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म सन् 1903 ई. को इलाहबाद (प्रयागराज - उत्तरप्रदेश) मे हुआ। बच्चन की काव्य कला अद्भुत थी। फारसी कवि उमर खैय्याम की रुबाइयों से प्रेरित होकर उन्होने अपनी अमर काव्य-कृति "मधुशाला" की रचना की जो उनकी प्रसिद्धि का प्रमुख आधार रही। बच्चन जी ईश्क, मोहब्बत व पीड़ा जैसी रुमानियत भरी विषयों पर काव्य रचना की।

प्रमुख रचनाएँ => मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, इत्यादि।

हिन्दी साहित्य मे अपना अमूल्य योगदान देने के बाद सन् 2003 ई. उन्होनें इस दुनिया को अलविदा कहा।

P.T.O

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र०9 निबंध :

"मेरा प्रिय कवि"

⇨ प्रस्तावना :-

कविता मानव जीवन तथा मानवता का एक अभिन्न अंग मानी जाती है तथा कवि होना तो अपने आप में ही एक अलग बात है। महान गीतकार गोपाल दास नीरज जी लिखते है कि:-

> "आत्मा के सौंदर्य का शब्द रूप है काव्य
> मानव होना भाग्य है कवि होना सौभाग्य"

कवि होना अपने आप में ही एक सौभाग्य है। वैसे तो कई कवि जैसे कबीर, तुलसीदास, बिहारी, कुंवर नारायण, श्रवण आदि मुझे प्रभावित करते है किन्तु मेरे प्रिय कवि "श्री रामधारी सिंह दिनकर जी" है। उनसे मेरा जीवन काफी प्रभावित है। वह एक अच्छे कवि होने के साथ-साथ एक सफल राजनितिज्ञ भी रहे। राजनीति में 12 वर्ष तक राज्यसभा सदस्य रहने के जब उन्हें लगा की अब राजनीति भ्रष्टाचार हो गई है तो उन्होने अपना इस्तिफा दे दिया। हिन्दी साहित्य में भी आपका योगदान अमूल्य है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मेरे जीवन पर प्रभाव :-

दिनकर जी की कविताओं से स्पष्ट होता है कि वे एक अच्छे कवि होने के साथ-साथ एक अच्छे मार्गदर्शक भी थे। जब कभी मन में अवसाद की आवना आती है तो मैं उनकी यही कविता गुनगुनाया करता हुं :

"दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने खुन पिया वह फुल जरूर खिलाएगी ही।
अम्बर पर घन बन छायेगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच देवता इतना क्रुर नही है।
थक कर बैठ गए क्या भाई मंजिल दुर नही है।
मंजिल दुर नही है।"

दिनकर जी की यह कविता हमेशा से मेरा मार्गदर्शन करती आ रही है तथा जीवन भर मेरा मार्गदर्शन करती रहेगी। जब कभी मन में हार की भावना आती है तो उनकी यही पंक्तियां मुझे जीतने को प्रेरित करती है तथा उत्साह से भर देती है। इनकी काव्य रचना में अद्भुत जादु है। यह जीवन भर मेरा और पूरे संसार के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत रहेंगे। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पूजनीय नेहरु जी के अच्छे मित्र होते हुए भी उनकी गलतियों को उनके समक्ष कविताओं के माध्यम से रखते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हिन्दी साहित्य में योगदान :-

साहित्य में इनका योगदान अविस्मरणीय तथा अमूल्य है। 'रश्मिरथी' जैसे अमर काव्य ने इनको अमरता प्रदान की। 'रश्मिरथी' की कुछ पंक्तियाँ मुझे बहुत अच्छी लगती है जो कि इस प्रकार है।

"मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का और वीरों का
धनुष छोड़कर और गोत्र क्या होता है रणधीरों का
पाते है सम्मान तपोबल से इस भूतल पर शूर
जाति-जाति का पात मचाते केवल कायर और क्रूर"

इसके अतिरिक्त इनकी काव्य प्रतिभा का परिचय देने वाली कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है:-

" गह्वर गोरेय्य सूधर-भूधर से लिए रक्त रंजित शरीर
थे जूझ रहे कौंतेय कर्ण क्षण-क्षण करते गंभीर
दोनो नर समबल, दोनो रणकुशल
दोनों पर दोनों की अमोघ थी।"

इस प्रकार हिन्दी साहित्य को उन्होने अपनी रचनाओं से अधिक निखारा।

उपसंहार :-

वैसे तो आज के इस यंत्र-प्रधान युग में कविता की लोकप्रियता घटती जा रही है किन्तु दिनकर जी जैसे कवि द्वारा लिखा साहित्य सदैव अमर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

रहेगा तथा हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

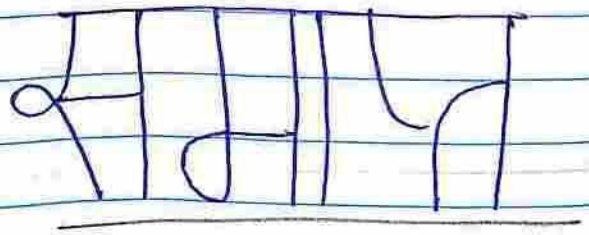

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

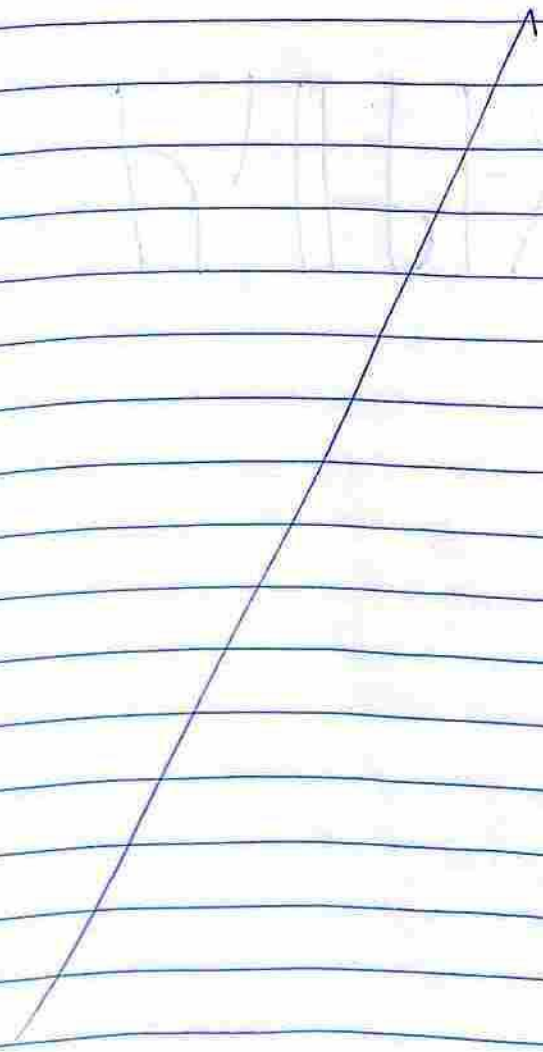

IISER-16/5/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर